राष्ट्रीय सहारा
मंगलवार, 1 दिसंबर 2015

शिक्षा में भाषा और संस्कृति भी शामिल हो

गिरीश्वर मिश्र
कुलपति, महात्मा गांधी
अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

शिक्षा और संस्कृति का बड़ा गहरा रिश्ता है. दोनों ही एक दूसरे को रचती हैं और उस प्रक्रिया में भाषा माध्यम बनती है. संस्कृति की सबसे प्रबल अभिव्यक्ति भाषा में होती है और शिक्षा भी भाषा के बिना अकल्पनीय है. भाषा हमारे संप्रेषण को संभव बनाती है. जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अच्छे संप्रेषण की कितनी अहमियत है, यह बताने की जरूरत नहीं. एक बहुभाषिक देश होने के कारण भारत में भाषा-प्रयोग की दृष्टि से एक बड़ी चुनौती उपस्थित होती है. यहां कई तरह की भाषाएं हैं. एक ओर तो संस्कृत, तमिल तथा फारसी जैसी भाषाएं हैं जिनकी बड़ी प्राचीन परंपराएं हैं और विपुल साहित्य है. दूसरी ओर ऐसी भी कुछ भाषाएं हैं जिनकी कोई अपनी लिपि नहीं है और वे अभी भी मौखिक रूप में ही प्रचलित हैं. औपचारिक रूप से भाषा का प्रश्न हमारे संविधान का मामला है. संविधान की आठवीं अनुसूची में कुल बाईस भाषाओं को शामिल किया गया है. ये सभी भाषाएं भारत के विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक विशिष्टता को संजोए हुए देश की बहुरंगी छटा प्रस्तुत करती हैं. भाषा और संस्कृति की विविधता भारतीय जीवन की एक बड़ी सच्चाई है जिसे सदैव याद रखना आवश्यक है. भाषा और उसके साहित्य में कला, परंपरा, संस्कार और साहित्य के साथ पूरी संस्कृति जीवंत रहती है, अगली पीढ़ी तक पहुंचती है और समाज को उसका एक प्रबल आधार प्रदान करती है.

मूल्यों के क्षरण को थामने के लिए औपचारिक शिक्षा की व्यवस्था में कोई जगह कैसे बने, यह एक यक्ष प्रश्न सा बन गया है. यह सोचना जरूरी हो गया है कि इस काम में भाषा क्या कर सकती है? हम भाषा की सहायता से क्या सामाजिक-सांस्कृतिक एका की ओर बढ़ सकते हैं? 'मेरा' और 'मैं' पर केंद्रित आज की स्वार्थ-वृत्ति जगजाहिर है. इसी तरह किस तरह क्षेत्र, भाषा, धर्म और जाति की संकीर्णता भी सामाजिक जीवन पर हावी हो रही है.

स्मरण रहे कि मात्र भूगोल ही संस्कृति को नहीं तय करता है और संस्कृति एक संश्लिष्ट अवधारणा है. विभिन्न संस्कृतियों में क्या समानता और निकटता है, इसे भी समझना जरूरी है. हर संस्कृति में कुछ न कुछ खास ज्ञान होता है जिसे जानना आकर्षक और उपयोगी ही नहीं, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने वाला होगा. भाषा में निहित सांस्कृतिक तत्वों पर बल दिया जाना उपयोगी होगा. हमारी उत्सुकता के दायरे में संस्कृति को समझने की लालसा भी आनी चाहिए. बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि विभिन्न सांस्कृतिक रूपों के साथ हमारा सामान्य परिचय घट रहा है. 'संस्कृति' में मनुष्य समाज की सभी रचानाकृतियां शामिल हो

आज आवश्यकता है कि संस्कृति के विभिन्न और बहुआयामी रूप को उजागर करने वाले पाठ भाषा के अध्ययन में शामिल किए जाएं.

जाती हैं. भाषा, मूल्य, विश्वास, खान-पान, वेश-भूषा, रहन-सहन, सब कुछ. इन सबके साथ हर किसी का जबर्दस्त जुड़ाव होता है और इन्हें यदि आदर न मिले तो लोग अपने को उपेक्षित-तिरस्कृत महसूस करते हैं. पर जब हम खुद को इनके करीब पाते हैं तो निकटता और अपनापन का भाव पैदा होता है.

आज आवश्यकता है कि संस्कृति के विभिन्न और बहुआयामी रूप को उजागर करने वाले पाठ भाषा के अध्ययन में शामिल किए जाएं, उनके माध्यम से देश में पारस्परिक सांस्कृतिक निकटता को सुदृढ़ किया जा सकता है. कविता, कहानी, नाटक, लोक-कला और लोकोक्तियां इसके लिए अच्छे माध्यम साबित होंगे. चूंकि भाषा में संस्कृति का जीवन स्पंदित होता है इसलिए भाषाओं की रक्षा और संवर्धन आवश्यक है. हां, हर भाषा की अपनी खूबी होती है और उसकी विलक्षणताओं को समझना आह्लादकारी होता है. भाषाएं न छोटी होती हैं न बड़ी, हमें सभी भाषाओं को समान आदर देना चाहिए. ■■